

प्रश्नव्याकरण सूत्र (फोल्डर नं. ००१२२३)

मुख्य टाईटल

समर्पण

प्रकाशकीय

आदि-वचन

प्रस्तावना

अपनी बात

विषयानुक्रमणिका

प्रश्नव्याकरणसूत्र

प्रथम श्रुतस्कन्ध : आस्रवद्वार

प्रथम अध्ययन – हिंसा

पूर्वपीठिका -----	३
हिंसा-----	५
प्राणवध का स्वरूप-----	६
प्राणवध के नामान्तर-----	९
पापियों का पापकर्म-----	१३
जलचर जीव-----	१३
स्थलचर चतुष्पद जीव-----	१३
उरपरिसर्प जीव-----	१४
भुजपरिसर्प जीव-----	१४
नभचर जीव-----	१५
अन्य विविध प्राणी-----	१५
हिंसा करने के प्रयोजन-----	१६
पृथ्वीकाय की हिंसा के कारण-----	२१
अप्काय की हिंसा के कारण-----	२१
तेजस्काय की हिंसा के कारण-----	२१
वायुकाय की हिंसा के कारण-----	२२
वनस्पतिकाय की हिंसा के कारण-----	२२
हिंसक जीवों का दृष्टिकोण-----	२३
हिंसक जन-----	२४
हिंसक जातियाँ-----	२५
हिंसकों की उत्पत्ति-----	२८
नरक-वर्णन-----	२८
नारकों का वीभत्स शरीर-----	३१

नारकों को दिया जाने वाला लोमहर्षक दुःख-----	३२
नारक जीवों की करुण पुकार-----	३४
नरकपालों द्वारा दिये जाने वाले घोर दुःख-----	३४
नारकों की विविध पीड़ाएँ-----	३६
नारकों के शस्त्र-----	३६
नारकों की मरने के बाद की गति-----	३९
तिर्यञ्चयोनि के दुःख-----	४१
चतुरिन्द्रिय जीवों के दुःख-----	४३
त्रीन्द्रिय जीवों के दुःख-----	४४
द्वीन्द्रिय जीवों के दुःख-----	४५
एकेन्द्रिय जीवों के दुःख-----	४५
मनुष्यभव जीवों के दुःख-----	४७
उपसंहार-----	४८
द्वितीय अध्ययन – मृषावाद	
मृषावाद का स्वरूप-----	५०
मृषावाद के नामान्तर-----	५१
मृषावादी-----	५३
मृषावादी-नास्तिकवादी का मत-----	५४
असद्भाववादी का मत-----	५९
प्रजापति का सृष्टिसर्जन-----	६२
मृषावाद-यदृच्छावाद, स्वभाववाद, विधिवाद, नियतिवाद, पुरुषार्थवाद, कालवाद-----	६५
झूठा दोषारोपण करने वाले निन्दक-----	६८
लोभजन्य अब्धकारी झूठ-----	६९
उभयघातक (असत्यवादी)-----	७१
पाप का परामर्श देने वाले-----	७१
हिंसक उपदेश-आदेश-----	७४
युद्धादि के उपदेश-आदेश-----	७५
मृषावाद का भयानक फल-----	७७
फल-विपाक की भयंकरता-----	७९
उपसंहार-----	८०
तृतीय अध्ययन – अदत्तादान	
अदत्त का परिचय-----	८२
अदत्तादान के तीस नाम-----	८४
चौर्यकर्म के विविध प्रकार-----	८६
धन के लिए राजाओं का आक्रमण-----	८७

युद्ध के लिए शस्त्र-सज्जा-----	८९
युद्धस्थल की वीभत्सता-----	८९
वनवासी चोर-----	९१
समुद्री डाके-----	९१
ग्रामादि लूटने वाले-----	९३
चोर को बन्दीगृह में होने वाले दुःख-----	९६
चोर को दिया जाने वाला दंड-----	९८
चोरों को दी जाती हुई भीषण यातनाएँ-----	१०२
पाप और दुर्गति की परम्परा-----	१०४
संसार-सागर-----	१०५
भोगे विना छुटकारा नहीं-----	११०
उपसंहार-----	१११
चतुर्थ अध्ययन – अब्रह्म	
अब्रह्म का स्वरूप-----	११२
अब्रह्म के गुणनिष्पन्न नाम-----	११३
अब्रह्मसेवी देवादि-----	११५
चक्रवर्ती के विशिष्ट भोग-----	११७
चक्रवर्ती का राज्यविस्तार-----	११७
चक्रवर्ती नरेन्द्र के विशेषण-----	११७
चक्रवर्ती के शुभ लक्षण-----	११७
चक्रवर्ती की ऋद्धि-----	११८
बलदेव और वासुदेव के भोग-----	१२२
माण्डलिक राजाओं के भोग-----	१२७
अकर्मभूमिज मनुष्यों के भोग-----	१२७
अकर्मभूमिज नारियों की शरीर-सम्पदा-----	१३२
परस्त्री में लुब्ध जीवों की दुर्दशा-----	१३५
अब्रह्मचर्य का दुष्परिणाम-----	१३७
पञ्चम अध्ययन – परिग्रह	
परिग्रह का स्वरूप-----	१४१
परिग्रह के गुणनिष्पन्न नाम-----	१४३
परिग्रह के पाश में देव एवं मनुष्यगण भी बँधे हैं-----	१४६
विविध कलाएँ भी परिग्रह के लिए-----	१४८
परिग्रह पाप का कटु फल-----	१५४
आस्रवद्वार का उपसंहार-----	१५६
द्वितीय श्रुतस्कंध – संवरद्वार	

भूमिका-----	१५७
प्रथम अध्ययन – अहिंसा	
संवरद्वारों की महिमा-----	१६०
अहिंसा भगवती के साठ नाम-----	१६१
अहिंसा की महिमा-----	१६५
अहिंसा के विशुद्ध दृष्टा और आराधक-----	१६७
आहार की निर्दोष विधि (नवकोटिपरिशुद्ध, शंकितादि दस दोष, सोलह उद्गमदोष, सोलह उत्पादनादोष)-----	१७१
प्रवचन का उद्देश्य और फल-----	१७६
अहिंसा महाव्रत की प्रथम भावना : ईर्यासमिति-----	१७७
अहिंसा महाव्रत की द्वितीय भावना : मनःसमिति-----	१७८
अहिंसा महाव्रत की तृतीय भावना : वचनसमिति-----	१७८
अहिंसा महाव्रत की चतुर्थ भावना : आहारैषणासमिति-----	१७८
अहिंसा महाव्रत की पंचमी भावना : आदान-निक्षेपणसमिति-----	१८०
उपसंहार-----	१८२
द्वितीय अध्ययन – सत्य	
सत्य की महिमा-----	१८४
सदोष सत्य का त्याग-----	१८५
बोलने योग्य वचन (ऐसा सत्य भी वर्जनीय, सत्य के दस प्रकार, भाषा के बारह प्रकार, सोलह प्रकार के वचन)-----	१८५
सत्यमहाव्रत का सुफल-----	१९१
सत्यमहाव्रत की पाँच भावनाएँ-----	१९१
प्रथम भावना : अनुवीचिभाषण-----	१९१
दूसरी भावना : अक्रोध-----	१९२
तीसरी भावना : निर्लोभता-----	१९२
चौथी भावना : निर्भयता-----	१९३
पाँचवीं भावना : हास्य-त्याग-----	१९४
उपसंहार-----	१९७
तृतीय अध्ययन – दत्तानुज्ञात	
अस्तेय का स्वरूप-----	१९९
ये अस्ते के आराधक नहीं-----	२०१
अस्तेय के आराधक कौन?-----	२०४
अस्तेय की आराधना का फल-----	२०६
अस्तेय व्रत की पाँच भावनाएँ-----	२०७
प्रथम भावना : निर्दोष उपाश्रय-----	२०७

द्वितीय भावना : निर्दोष संस्तारक-----	२०८
तृतीय भावना : शय्यापरिकर्मवर्जन -----	२०८
चतुर्थ भावना : अनुज्ञात भक्तादि -----	२०९
पंचमी भावना : साधर्मिक-विनय -----	२१०
उपसंहार-----	२११
चतुर्थ अध्ययन – ब्रह्मचर्य	
ब्रह्मचर्य की महिमा-----	२१३
बत्तीस उपमाओं से मण्डित ब्रह्मचर्य -----	२१७
महावर्ती का मूल : ब्रह्मचर्य -----	२२०
ब्रह्मचर्याविघातक निमित्त-----	२२१
ब्रह्मचर्य-रक्षक नियम-----	२२२
ब्रह्मचर्यव्रत की पाँच भावनाएँ-----	२२४
प्रथम भावना – विविक्त-शयनासन -----	२२४
द्वितीय भावना-स्त्रीकथावर्जन-----	२२४
तृतीय भावना-स्त्रियों के रूप-दर्शन का त्याग-----	२२५
चतुर्थ भावना-पूर्वभोग-चिन्तनत्याग -----	२२६
पंचम भावना-स्निग्ध-सरस भोजन-त्याग -----	२२७
उपसंहार-----	२२९
पंचम अध्ययन – परिग्रहत्याग	
उत्क्षेप -----	२३१
धर्मवृक्ष का रूपक-----	२४०
अकल्पनीय-अनाचरणीय -----	२४१
सन्निधि-त्याग-----	२४२
कल्पनीय भिक्षा -----	२४५
साधु के उपकरण-----	२४७
निर्ग्रन्थों का आन्तरिक स्वरूप -----	२४८
निर्ग्रन्थों की ३१ उपमाएँ -----	२५०
अपरिग्रहव्रत की पाँच भावनाएँ-----	२५३
प्रथम भावना-श्रोत्रेन्द्रिय-संयम-----	२५३
द्वितीय भावना-चक्षुरिन्द्रिय-संयम -----	२५५
तीसरी भावना-घ्राणेन्द्रिय-संयम -----	२५७
चतुर्थ भावना-रसनेन्द्रिय-संयम-----	२५८
पंचम भावना-स्पर्शनेन्द्रिय-संयम-----	२५९
पंचम संवरद्वार का उपसंहार-----	२६०
सम्पूर्ण संवरद्वार का उपसंहार-----	२६४

परिशिष्ट

उत्थानिक-पाठान्तर-----	२६५
गाथानुक्रमसूची-----	२६७
कथाएँ-----	२६८
विशिष्ट शब्दों एवं नामों का कोश-----	२८२